था।

असामान्य मनोविज्ञान का आधुनिक उद्भव (1801-1950)

पिनेल तथा टूके द्वारा अपनायी गयी मानवीय उपचार विधियों ने असामान्य मनोविज्ञान को एक नई दिशा दी। इनसे प्रभावित होकर अमेरिका में बेन्जामिन रश ने 1796 में मानसिक रोगियों के उपचार के लिए एक अलग रोगीकक्ष तैयार करवाया जहाँ उनके मनोरंजन के लिए तरह-तरह के साधन थे ताकि उन्हें रचनात्मक कार्यों हेतु प्रेरित किया जा सके। परंतु उनका यह चिकित्सा-संबंधी सिद्धान्त अधिक लोकप्रिय नहीं हो पाया क्योंकि यह सिद्धान्त नक्षत्रशास्त्र (Astrology) से प्रभावित था। इनका उपचार विधि रक्तमोचन तथा विभिन्न औषधि के उपयोग पर आधारित था, जो कि अमानवीय विधियाँ ही थीं।

अमेरिका में 19वीं शताब्दी के आरंभ में एक महिला शिक्षिका डोरोथिया डिक्स के प्रयासों से 'मानसिक स्वास्थ्य विज्ञान आंदोलन' की शुरुआत की गयी जिसमें मानसिक रोगियों के प्रति मानवीय प्रयासों को शामिल किया गया। इस आंदोलन ने मानसिक रोगियों को बन्धन-मुक्त कर दिया। उनमें नैतिकता के स्तर को ऊपर रखने हेतु कुछ कार्यों जैसे- खेती-बाड़ी, बढ़ईगिरी आदि में उन्हें लगाया गया। इन प्रयासों से अन्य देशों में भी मानसिक अस्पतालों में मानवीय सुधार लाये गये और मानसिक रोगियों को एक प्रकार का मानवीय उपचार उपलब्ध हो सका।

फ्रांस में एण्टोन मेस्मर ने मानसिक रोगियों के उपचार हेतु पशु-चुम्बकत्व की विधि पर कार्य किया जिसमें कि रोगियों में बेहोशी जैसी मानसिक स्थिति उत्पन्न कर दी जाती थी जिसे मेस्मेरिज्म कहा गया और बाद में इसे सम्मोहन की संज्ञा दी गयी परिणामस्वरूप मनोस्नायुविकृति (Psychoneurosis)

Scanned with CamScanner

को असामान्य मनोविज्ञान में एक विशेष रोग माना जाने लगा। बाद में फ्रांस के एक तंत्रिका विज्ञानी जो, हिस्टीरिया के उपचार के लिए सम्मोहन विधि का सफलतापूर्वक प्रयोग किया इनके छात्रों में सिगमण्ड फ्रायड तथा पियरे जैनेट प्रमुख थे। पियरे जैनेट ने मनोस्नायुविकृति में मनोविच्छेद (dissociation) के महत्व को अलग से बतलाया था।

जर्मनी के विलियम ग्रिसिंगर तथा एमिल क्रेपलिन ने मानसिक रोगों का आधार दैहिक माना और इस बात पर बल डाला कि - जिस तरह शरीर के किसी अंग में विकृति होने पर शारीरिक बीमारी होती है, उसी प्रकार मानसिक बीमारी भी किसी अंग विशेष में विकृति उत्पन्न होने से होती है। इसे असामान्य मनोविज्ञान के इतिहास में असामान्यता का आंगिक दृष्टिकोण (Organic viewpoint of abnormality) कहा जाता है।

एमिल क्रेपलिन ने विभिन्न लक्षणों के आधार पर मानसिक रोगों को विभिन्न प्रकारों में बाँटा तथा उनकी उत्पत्ति के कारणों का विस्तार से वर्णन भी किया। इन्होंने उत्साह-विषाद मनोविकृति जैसे मानसिक रोग का नामकरण किया। उनका दूसरा मनोविकृति के प्रकार का नाम Dementia praecox था जिसे आज मनोविदालिता (Schizophrenia) कहा जाता है। इन्होंने मनोविकृति एवं अन्य मानसिक रोगों का कारण वंशानुक्रम तथा मस्तिष्कीय आघात को माना। जो विभिन्न कारकों जैसे - दुर्घटना, विष, शारीरिक बिमारी आदि से उत्पन्न हो सकते हैं।

19वीं शताब्दी के अंतिम समय में आस्ट्रिया के सिगमण्ड फ्रायड (Sigmund Freud, 1856-1939) जो एक तंत्रिकाविज्ञानी एवं मनोरोगविज्ञानी थे महत्वपूर्ण योगदान दिये। इन्होंने मानसिक रोगों के कारणों की व्याख्या दैहिक कारकों की अपेक्षा मनोवैज्ञानिक कारकों को अधिक महत्वपूर्ण माना। असामान्य मनोविज्ञान के क्षेत्र में फ्रायड के योगदान में मुक्त साहचर्य विधि, अचेतन, स्वप्न विश्लेषण, मनोरचनाएँ, मनोलैंगिक सिद्धान्त आदि प्रमुख हैं। इन्होंने जोसफ ब्रियुअर से इन्होंने मनोस्नायुविकृति के रोगियों पर सम्मोहन विधि का प्रयोग सीखा और पाया कि इस अवस्था में रोगी अपने संवेगों, संघर्षों एवं भावनाओं को आसानी से प्रकट करता है। जिसका संबंध उसकी मानसिक बिमारी से होती है। उन्होंने अपने अनुभवों एवं रोगियों के निरीक्षण से यह पाया कि

अधिकतर मानसिक संघर्ष और दुश्चिन्ता (anxiety) का स्रोत अचेतन होता है, जिसे चेतन से दबाकर व्यक्ति अपने अचेतन में दमित किये हुये रहता है। ये दमित इच्छाएँ एवं अभिप्रेरक व्यक्ति के व्यवहारों को अचेतन रूप से नियंत्रित करती हैं। इन दमित इच्छाओं को जानने के लिए फ्रायड ने मुक्त साहचर्य विधि एवं स्वप्न विश्लेषण विधि पर अधिक बल डाला है। मानसिक रोगियों की चिकित्सा हेतु उन्होंने 'मनोविश्लेषण विधि' का प्रतिपादन किया है, जिसमें स्वप्न विश्लेषण और मुक्त साहचर्य विधि के द्वारा अचेतन की इच्छाओं को बाहर निकाला जाता है और उसका अनुकूल उपचार किया जाता है। इनके प्रमुख शिष्यों – कार्ल युंग जिसने विश्लेषणात्मक मनोविज्ञान और अल्फ्रेड एडलर ने वैयक्तिक मनोविज्ञान के रूप में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

असामान्य मनोविज्ञान के आधुनिक काल में एडॉल्फ मेयर (1866-1950), जिनका जन्म स्विट्ज़रलैंड में हुआ था परन्तु 1892 में अमेरिका में बस गये, का योगदान भी महत्वपूर्ण है। इनके विचारधारा को मनोजैविक दृष्टिकोण (Psychobiological viewpoint) कहा जाता है। मेयर का मानना था कि असामान्य व्यवहार शारीरिक एवं मानसिक दोनों कारणों से होता है। इसलिए इसका उपचार भी दोनों आधारों पर किया जाना चाहिए। उन्होंने मानसिक रोग की उत्पत्ति में व्यक्ति के सामाजिक वातावरण को भी महत्वपूर्ण माना है। इसी कारण रैनी (1957) ने इनके सिद्धान्त को मनोजैविक सामाजिक सिद्धान्त कहा है। मेयर का विचार था कि मानसिक रोगियों की उपयुक्त चिकित्सा के लिए उसके जैविक पदार्थ जैसे – हारमोन्स, विटामिन्स को संतुलित करते हुए उसके बाह्य वातावरण में अंतर संबंधों को भी सुधारा जाना चाहिए। इन प्रविधियों का प्रयोग आज भी असामान्य मनोविज्ञान में सफलता पूर्वक किया जा रहा है।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि असामान्य मनोविज्ञान के आधुनिक काल (1801–1950) में असामान्य मनोविज्ञान उपचार के अमानवीय तरीकों से निकलकर मानवीय विधियों को पूर्णरूपेण आत्मसात कर लिया। साथ ही असामान्यता का अध्ययन जैविक, मनोवैज्ञानिक तथा सामाजिक तीनों ही दृष्टिकोणों से करना प्रारंभ कर दिया।

Scanned with CamScanner

आज का असामान्य मनोविज्ञान : 1951 से वर्तमान तक

20 वीं शताब्दी के प्रारंभ तक मानसिक रोगियों के उपचार के लिए मानसिक अस्पताल ही एक मात्र केन्द्र थीं। चूँकि इन अस्पतालों में रोगियों के साथ होने वाले अमानवीय व्यवहार लोगों के सामने आये और लोगों की मनोवृत्ति परिवर्तित होने लगी। अमेरिका के बहुत से मानसिक अस्पतालों में रोगियों के साथ ऐसा व्यवहार किया जाता था जो कहीं से भी मानवीय नहीं था, जिससे रोगियों का मानसिक रोग कम होने के बजाए पर बढ़ता ही जाता था। कुछ रोगियों का देहान्त भी हो जाता था। जिससे मानसिक अस्पतालों में रोगियों को रखने के प्रति लोगों की इच्छा समाप्त होने लगी। जिससे इन अस्पतालों की जगह अमेरिका में सामुदायिक मानसिक स्वास्थ्य केन्द्रों ने ले लिया। जिसका मुख्य उद्देश्य मानवीय ढंग से मानसिक रोगियों को उत्तम उपचार उपलब्ध कराना है। जिसमें चौबीस घंटा आपातकालीन देखभाल, अल्पकालीन तथा आंशिक अस्पताली सेवा, बाह्य रोगियों की देखभाल एवं प्रशिक्षण तथा परामर्श कार्यक्रम शामिल हैं।

अमेरिका एवं कनाडा में वर्तमान समय में स्वास्थ्य केन्द्रों का एक नवीनतम रूप जिसे 'संकटग्रस्त हस्तक्षेप केन्द्र' कहा जाता है, विकसित हुआ है। जिसका उद्देश्य मानसिक रोगियों को तत्काल सहायता पहुँचाना होता है।

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि असामान्य मनोविज्ञान का इतिहास काफी उतार-चढ़ाव भरा रहा है। पूर्ववैज्ञानिक काल में असामान्य व्यवहार का कारण देवी-देवताओं का प्रकोप या भूत-प्रेत को माना जाता था। आधुनिक काल (1801–1950) में यह विचार असामान्य हो गया और मानसिक रोगों का कारण दैहिक, मनोवैज्ञानिक एवं सामाजिक माना गया। साथ ही उपचार के मानवीय पक्षों की महत्ता दी गयी। 1950 के बाद मानसिक अस्पतालों के अमानवीय व्यवहार उजागर हुए और इसकी आलोचना की गई। अब इन अस्पतालों को सुधारा गया और साथ ही इनको नये रूप में सामुदायिक मानसिक स्वास्थ्य केन्द्रों के नाम से स्थापित की गई। जहाँ उपचार के लिए मानवीय उपायों को अपनाया गया। वर्तमान में इन केन्द्रों के नवीनतम रूप में संकटकाल हस्तक्षेप केन्द्रों की स्थापना की गई है, जो 24 घंटा मानसिक रोगियों के मानवीय ढंग से उपचार के लिए तत्पर हैं। जिसे अमेरिका के अलावा अन्य देश भी अपना रहे हैं।

Scanned with CamScanner